परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका
श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष
सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक
राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक
बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

विशेष सहयोगी
अनिल कुमार ज्ञानचंद जैन, गंजबासौदा

सहयोगी
संजय गुलाबचंद जैन, इन्दौर
एड. खुशालचंद जैन, विदिशा
नेमीचंद जैन, गंजबासौदा 'खजुराहोवाले'

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855 IFSC Code: SBIN0030134 में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड, इन्दौर पर भेंजे।

पगडण्डी कहाँ चली गयी जो पहले थी - आचार्यश्री विद्यासागरजी

सुनील जैन 'संचय', शैलेष पिन्टू, ललितपुर। जिस घड़ी का इंतजार ललितपुर वासियों को तीन दशक से भी अधिक समय से था वह इंतजार 21 नवम्बर को पूरी हो गयी जब साधना के सुमेरु भारतीय संस्कृति के संवाहक संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज अपने विशाल संघ के साथ ललितपुर नगर में प्रवेश किया।

आचार्यश्री का पदविहार बांसी से ललितपुर की ओर प्रात:काल 6 बजे शुरु हुआ। जैसे ही लोगों ने आचार्य श्रेष्ठ के नगर आगमन की सुनी तो खुशियों का ठिकाना नहीं रहा। कोई पैदल को तो कोई गाड़ी से पदविहार में सम्मिलित होने के लिए पहुंचा। इतनी सुबह सुबह भारी जनसैलाव उमड़ा देख रास्ते में पड़ने वाले गांवो के लोग भी आचार्यश्री की एक झलक पाने को लालायित देखे गये। जन सैलाव इतना था कि प्रशासन लोगों को दूर से ही दर्शन करने की अपील कर रहा था। बांसी से ही हजारों की संख्या में बिना जूते चप्पल के श्रद्धालु चल रहे थे। जैसे जैसे आचार्यश्री के पग आगे बढ़ रहे थे श्रद्धालुओं का जन सैलाव बढ़ता ही जा रहा था। हाईवे पर दूर दूर तक अपार भीड़ ही भीड़ दिख रही थी। आचार्यश्री के आगे आगे बैंड बाजे चल रहे थे इसके बाद पचरंगा झंडे लेकर कार्यकर्ता चल रहे थे इसके बाद पदाधिकारी चल रहे थे जो आचार्यश्री के दर्शन लोगों से दूर से करने की अपील कर रहे थे ताकि पद विहार में बाधा उत्पन्न न हो। इसके बाद आचार्यश्री संघ सहित चल रहे थे पश्चात उनसे कुछ दूरी पर जन सैलाब चल रहा था।

नगर में पूर्व से विराजमान मुनिश्री अविचल सागरजी ने नंदनवारा पहुँचकर आचार्यश्री के चरणों में नमोस्तु पूर्वक नमन किया। रास्ते में रंग बिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़े जा रहे थे। आचर्यश्री पदविहार करते हुए महर्रा ग्राम स्थित आदिनाथ कालेज प्रांगण में पहुंचे जहां पर मुख्य द्वार पर कालेज प्रबंधन ने आचार्यश्री का वंदन किया।

इस अवसर पर उपस्थित हजारो श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी एक चीज गुम गयी है। मैं आ रहा था, आप लोग भी आ रहे थे। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या वह चीज आप लोगों को मिल गयी ? इस पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने कहा 'हओ'। इस पर चुटकी लेते हुए आचार्यश्री ने कहा कि ललितपुर में भी 'हव' चलता कि नहीं। इस पर जन समुदाय ने कहा 'हओ'। उन्होंने कहा कि जो मतलब आप लोग समझ रहे हैं वह नहीं है।

उन्होंने आगे कहा कि मैं सोच रहा था कि भूल गए हैं आप लोग। उन्होंने कहा कि अब पगडण्डी जीवित है कि नहीं। अब शायद पगडण्डी जीवित नहीं रह पाएगी क्योंकि पगडंडियों पर चलाना तो चाहते हैं लेकिन चलना नहीं चाहते। अंत में उन्होंने कहा कि वाहनों पर लिखा रहता है 'फिर मिलेंगे'। पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में सुरक्षा व्यवस्था में लगे हुए पुलिस अधिकारी और सिपाही बड़े ही आनंद के साथ आचार्यश्री के आगे और पीछे दौड़ते भागते चल रहे थे। प्रशासन की ओर से सुरक्षा के समुचित प्रबंध किये गये थे। पंचायत समिति ने नगर की सीमा चंदेरा पर भव्य अगवानी की। इसके बाद विशाल जनसैलाब गल्लामंडी, इलाइट चौराहा, जेल चौराहा, तुवन चौराहा होते हुए विशाल शोभायात्रा स्टेशन रोड़ स्थित क्षेत्रपाल मंदिरजी पहुँची। रास्ते में लोगों ने श्रद्धालुओं को जल, मिठाई, फल देकर उनका खूब स्वागत किया। रास्ते में जहां नवयुवक करतब दिखाते हुए चल रहे थे वहीं अनेक बग्गियां, घोड़ो पर ध्वज लेकर चल रहे थे। विभिन्न स्वयंसेवी संगठन अपनी सेवाएं दे रहे थे। जिसने भी आज का यह नजारा देखा कह उठा अद्भुत, अकल्पनीय, ऐतिहासिक, भूतो न भविष्यति। नगर में जब जुलूस चल रहा था तो जिसको जहां जगह मिली वहां से इन अमूल्य पलों को देखने को आतुर थे। ऐसी कोई छत नहीं थी जिस पर बड़ी संख्या में नगरवासी न हो।

नगर में उत्सव जैसा माहौल था। पाठशाला के बच्चे आचार्यश्री के अभियान हथकरघा, इंडिया नहीं भारत बोलो आदि की तख्तियां लेकर चल रहे थे। कई किलोमीटर की लंबाई में अगवानी जुलूस देखने योग्य था।

आचार्यश्री के नगर आगमन पर स्वागत के लिये पूरा शहर सजाया गया था। सड़क के उपर किनारों में झिलमिल चमकनी तो सड़क पर रंगोली बनाई गई थी। अनेक स्वागत द्वार बनाये गये थे। शहर के लोग धरती के देवता को अपने बीच पाकर धन्य हो रहे थे। जयकारों से आकाश गुंजायमान हो रहा था। विभिन्न परिधानों में महिलायें स्वागत के लिए खड़ी थी।

अनियत विहारी का विहार - आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज कभी किसी को बता कर विहार नहीं करते इसलिए उनके आगे अनियत विहारी संत लिखा जाता है। ललितपुर नगर प्रवेश को लेकर यह देखने भी मिला है। नगरवासी 22 नवम्बर को उनके नगर प्रवेश की पूर्ण संभावना मानकर चल रहे थे। 22 नवम्बर के हिसाब से ही लोग तैयारी में जुटे थे। बाहर से आने वाले इष्ट मित्र, रिश्तेदारों को भी यही सूचना दी गई थी। लेकिन अचानक ही 21 तारीख को आचार्यश्री का मंगल पदार्पण नगर में हो गया। आज जब इतना जनसैलाब उमड़ पड़ा था यदि निर्धारित तिथि 22 नवम्बर को प्रवेश होता तो न जाने कितना जनसैलाव उमड़ता।.

महिलाओं की राह में उजाला कर रही 'ज्योति'

महिलाओ की सुरक्षा, सम्मान और उनसे जुड़े अनेक मुद्दों पर आवाज उठाने वाली महिलाओं में खतौली की साहित्यकार डॉ. ज्योति जैन का नाम भी शामिल है। वे विभिन्न संगठनों से जुड़ी हैं और सामाजिक उत्कृष्ट कार्यों के लिए राजस्थान में मुनि सुधासागरजी महाराज के सानिध्य में इनको पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया गया। इसके अलावा कई पुरस्कारों से भी आपको सम्मानित किया जा चुका है। वे सामाजिक और महिला उत्थान के लिए सतत काम कर रही है।

डॉ. ज्योति जैन महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दर्ज कराई है। वे पिछले दो दशकों से दिगम्बर जैन महासमिति में महिला प्रकोष्ठ संभागीय मंत्री तथा भारतीय जैन मिलन की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष है। इन्होंने खतौली की महिलाओं को जागरुक करने का काम किया और उनको विभिन्न संगठनों से जोड़ा, ताकि महिलाए संगठनों से जुड़ कर अपने को आत्मनिर्भर और सशक्तिकरण का हिस्सा बन सके। उन्होंने बाल, महिला, सामाजिक, धार्मिक विषयों पर करीब 150 से अधिक लेख लिखे है। भारतीय योग संस्थान व नारी कल्याण समिति से आप भी जुड़ी है। नारी कल्याण समिति के जरिए महिलाओं को जोड़ कर महिला उत्थान के अनेक कार्य किए।

महिलाओं के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको संस्कार सम्मान, सर्वोदय सम्मान, मैत्री समूह का आत्मीय सम्मान, मातृ वंदना पुरस्कार, रोटरी वोकेशनल अवार्ड, श्रुत संर्वद्धन पुरस्कार, भारतीय जैन मिलन की वीरांगना ऑफ द ईयर का सम्मान मिल चुका है। नगर में पिछले 15 वर्षों से प्रतिभा सम्मान समारोह का सफलतापूर्वक संयोजन कर रही हैं। अनेक प्रश्न मंचों का सफल संयोजन किया है। अनेक महिला संगठनो को मार्ग निर्देशन भी किया है। डॉ. ज्योति जैन के पति डॉ. कपूरचंद जैन कुंद कुंद जैन डिग्री कालेज में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने जैन धर्म के लिए कई ग्रंथ भी लिखे। डेढ़ वर्ष पूर्व अचानक पति की मृत्यु के बाद भी डॉ. ज्योति जैन ने अपने को कमजोर नहीं होने दिया और न ही अकेलापन महसूस किया। वे निरंतर महिला उत्थान एवं सामाजिक कार्यों में कदम बढ़ाकर महिलाओं की राह में लगातार उजाला कर रही हैं।

जनवरी से मार्च तक का महीना अर्थात बच्चों और माता पिता की परीक्षा का समय है। गहन अध्ययन और कठोर परिश्रम से आप सभी उच्चांक प्राप्त करें। इसके लिए गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ। परीक्षा परिणाम आने के पश्चात आपको एक और जिम्मेदारी पूर्ण करना है। अपनी अंकसूची की फोटोकॉपी और अपना पासपोर्ट फोटोग्राफ हम तक अवश्य भेजें ताकि जुलाई अंक में प्रकाशित होने वाले प्रतिभाशली छात्र छात्राओं में आपका नाम जुड़ सके। आगामी अंक में आवेदन पत्र प्रकाशित होगा, जिसे पूर्ण एवं स्वच्छ रुप भरकर समय पर हमारे कार्यालय में भेजना न भूले।

आपके परिवार में संपन्न मांगलिक अवसर जैसे कि 25वीं या 50वीं विवाह वर्षगांठ या बच्चों के विवाह का शुभ अवसर हो या जन्मदिवस की सुहानी यादें इनका विज्ञापन 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित कर इस सुखद एहसास को समाजजनों के साथ सांझा कर सकते है। ऐसे अवसरों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि अपने समाज की एकमात्र पत्रिका में मांगलिक प्रसंगों का विज्ञापन प्रदान कर गोलालारीय दर्शन को आर्थिक संबल कर पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अद्वितीय सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी छोटी सी सहायता राशि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।